शोध-सारांश

जब हिंदीतर प्रदेश के विद्यार्थियों को हिंदी सिखाई जाती है तो सिखाने वाले शिक्षकगण और शिक्षिकाओं के वास्तविक प्रशिक्षण के अभाव में वहाँ के विद्यार्थी गलत हिंदी सीखते हैं। उन विद्यार्थियों में कई तरह की गलतियाँ पाई जाती हैं। जैसे व्याकरणिक त्रुटियाँ, शब्द चयन में गलतियाँ, उच्चारण दोष आदि। हम जानते हैं कि आज के दौर में किसी भी भारतीय को अच्छी तरह हिंदी न आना सिर्फ शर्म की ही बात नहीं है बल्कि जीवन को गति देने के लिए भी हिंदी आना आवश्यक है। हिंदी सिखाने का कार्य 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति', वर्धा द्वारा नियमित रूप से और पूरी लगन के साथ किया जा रहा है, फिर भी जिस गति से हिंदी, हिंदीतर प्रदेशों में फैलाना चाहिए, उस गति से इसका विस्तार नहीं हो पा रहा है। आज हिंदी विश्व भाषा बनने के क्रम में है और हिंदीतर प्रदेशों की ये समस्या बहुत पहले से रही है। पर इस पर कभी राज्य सरकारों के द्वारा गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध ओड़िशा के झारसुगुड़ा शहर से संबंधित है| पश्चिम ओड़िशा में स्थित झारसुगुड़ा प्रारंभ में संबलपुर जिले का हिस्सा था। 01 अप्रैल 1994 को इसे एक स्वतंत्र जिला के रूप में गठित किया गया। जब हम झारसुगुड़ा शहर की भाषा की बात करें तो हमें इस ओर ध्यान देना होगा कि ओड़िशा की मुख्य भाषा 'ओड़िया' भाषा है। और प्रमुख बोलियों में से एक 'संबलपुरी'। पश्चिम ओड़िशा में 'संबलपुरी-बोली' बोली जाती है, और झारसुगुड़ा में भी मुख्य रूप से 'संबलपुरी-बोली' का प्रयोग किया जाता रहा है। समृद्ध औद्योगिक क्षेत्र बनने के साथ ही साथ झारसुगुड़ा की भाषा में भी समृद्धि देखी गई है, यहाँ भी भारत की सभी भाषा को बोलने वाले लोग रहते हैं और मुख्य रूप से 'हिंदी-भाषा' बोलने वाले।

यदि झारसुगुड़ा की शिक्षण प्रणाली की बात करें तो यहाँ- माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा (स्टेट बोर्ड), केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई बोर्ड), माध्यमिक शिक्षा का भारतीय प्रमाणपत्र (आई.सी.एस.ई बोर्ड) आदि माध्यम से विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है|

"ओड़िशा के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के हिंदी भाषा शिक्षण में मिलने वाली अशुद्धियाँ (विशेष संदर्भ झारसुगुड़ा शहर के विद्यालय)" में शोध कार्य करते समय मैंने देखा कि पूरे झारसुगुड़ा शहर में एक मात्र हिंदी विद्यालय है- 'सरस्वती शिशु विद्या मंदिर'। जहाँ हिंदी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में 'द्वितीय-भाषा' के रूप में और ओड़िया माध्यम विद्यालयों में 'प्रथम और तृतीय-भाषा' के रूप में हिंदी भाषा की शिक्षा दी जाती है। लेकिन विद्यार्थी जिस प्रकार की हिंदी सीख रहे हैं वह चिंता का विषय है। और हिंदी भाषा की शिक्षा देने वाले शिक्षकों के द्वारा दी जा रही शिक्षा; एक बहुत बड़े प्रश्नचिह्न को खड़ा करती है।

लघु शोध कार्य के लिए बनाई गई प्रश्नावली का विवरण -

मुख्य रूप से यह प्रश्नावली अहिंदी भाषी क्षेत्र ओड़िशा के झारसुगुड़ा शहर के विद्यालयों में हिंदी शिक्षण के जमीनी स्तर को या बुनियादी स्तर को जाँचने के लिए बनाई गई |

इस प्रश्नावली के **परिशिष्ट (क)** में विद्यार्थियों का परिचय, शिक्षण की भाषा, शिक्षा का बोर्ड.....आदि सामान्य जानकारी प्राप्त की गई|
परिशिष्ट (ख) II के द्वारा विद्यार्थियों के हिंदी वर्णमाला का ज्ञान, स्वर और व्यंजन वर्णों की जानकारी प्राप्त की गई |
परिशिष्ट (ग) के द्वारा व्याकरण के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रश्न तैयार किया गया | जिसमें
(1) स्त्रीलिंग-पुल्लिंग,
(2) एकवचन-बहुवचन,
(3) विशेषणों का प्रयोग,
(4) क्रियाओं का उचित प्रयोग,
(5) शब्द चयन की समझ की आदि जानकारियाँ प्राप्त की गई, जाँची गई |
परिशिष्ट (घ) में विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, शब्दभंडार और वाक्यनिर्माण के ज्ञान को निबंध लेखन के द्वारा प्राप्त किया गया |

लघु शोध प्रबंध का अध्यायीकरण –

अध्याय-1 में ओड़िशा जहाँ भारत की आबादी का ग्यारहवाँ हिस्सा ओड़िशा में बसा है। इस राज्य में 30 जिलों में से एक है- झारसुगुड़ा। जिसमें शोधकार्य के दौरान सुधार की आवश्यकता दिखी है, जिसे हम आगे बढ़ते हुए देखेंगे। भाषा में त्रुटियाँ, ओड़िशा और झारसुगुड़ा का परिचय, भाषाई स्थिति और शिक्षण प्रणाली आदि को इस अध्याय में रखा गया है |

अध्याय-2 को तीन भागों में विभाजित किया गया है यथा 2.1, 2.2, 2.3 आदि | अध्याय 2.1 में प्रथम भाषा हिंदी, 2.2 में द्वितीय भाषा हिंदी और 2.3 में प्रथम और तृतीय भाषा हिंदी को रखा गया है| इस अध्याय में प्रथम और द्वितीय भाषा हिंदी के डाटा का विश्लेषण किया गया | इस अध्याय में तीन विद्यालय को रखा गया है 1- हिंदी माध्यम, 2- अंग्रेजी माध्यम, 3- ओड़िया माध्यम विद्यालय | पूरे अध्याय को प्रश्नावली के प्रश्नों के अनुरूप ही रखा गया है और प्राप्त उत्तरों को टेबल और चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है| अहिंदी भाषी क्षेत्र के इन विद्यार्थियों को मुख्य रूप से स्त्रीलिंग-पुल्लिंग शब्दों के चयन में, वाक्य निर्माण में एकवचन को बहुवचन बनाने में मुख्य रूप से असुविधाओं का सामना करना पड़ता है| इन त्रुटियों को जानने का प्रयत्न आगे के अध्यायों में किया गया हैं|

अध्याय- 3 में तृतीय भाषा हिंदी के डाटा का विश्लेषण किया गया | इस अध्याय में चार ओड़िया माध्यम विद्यालयों से प्राप्त डाटा को रखा गया है| अध्याय तीन को चार भागों में विभाजित किया गया है, यथा- 3.1, 3.2, 3.3, 3.4 आदि | इन अध्यायों में चार ओड़िया माध्यम विद्यालय को रखा गया | चयनित विद्यालयों में जब हम निबंध लेखन की बात करें तो देखेंगे कि एक भी विद्यालय के विद्यार्थी का लेखन संतोषजनक नहीं रहा, इनमें वाक्य निर्माण और शब्द चयन की त्रुटियाँ भरपूर मात्रा में देखे गए | विद्यार्थियों के लिए इस प्रश्नावली में थोड़ी सी राहत दी गई थी, यह इस प्रकार थी- परिशिष्ट (ग) के प्रश्नों के साथ एक-एक उदाहरण भी दिए गए थे, फिर भी विद्यार्थियों ने अप्रत्याशित त्रुटियाँ की | स्थिति की गंभीरता को और भी अच्छी तरह से जानने के लिए प्रश्नावली के क्रियाओं के प्रयोग प्रश्न के

उत्तरों, श्रुतलेख और पुल्लिंग-स्त्रीलिंग के टेबल और चार्ट को देख सकते हैं| कुछ विद्यार्थी ऐसे भी थे जिन्हें हिंदी, अंग्रेजी और ओड़िया किसी भी भाषा में अपना नाम तक नहीं लिखना आता था और न ही हिंदी वर्ण अक्षरों का ज्ञान था |

अध्याय- 2 और 3 में चयनित सातों विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्राप्त उत्तरों का एक नमूना इस प्रकार है-

सातों विद्यालयों के नाम	स्वर ध्वनियाँ के सही उत्तर (प्रतिशत अंकों के द्वारा)	व्यंजन वर्ण के सही उत्तर (प्रतिशत अंकों के द्वारा)
(1) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (हिंदी माध्यम)	3.33%	70%
(2) द एसेंबली ऑफ़ गॉड स्कूल	0%	3.33%
(3) ओ.पी.एम. बालिका उच्च विद्यालय	13%	0%
(4) अरोमा पूर्णांग शिक्षा गवेषणा केंद्र मातृज्योति विद्यालय	34.48%	0%
(5) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर(ओड़िया माध्यम)	56%	0%
(6) सरकारी उच्च बालिका विद्यालय	0%	0%
(7) ओ.पी.एम. उच्च विद्यालय (बालक)	20%	6.66%

सातों विद्यालयों से प्राप्त उत्तरों को प्रतिशत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है| यह प्रतिशत अंक 30 प्रतिभागियों के आधार पर निकाला गया है|

क्रम संख्या **1- सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (हिंदी माध्यम)** में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 3.33% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 70% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

2- द एसेंबली ऑफ़ गॉड स्कूल में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 0 % ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 3.33% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

3- ओ.पी.एम. बालिका उच्च विद्यालय में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 13% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

4- अरोमा पूर्णांग शिक्षा गवेषणा केंद्र मातृज्योति विद्यालय में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 34.48% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

5- सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (ओड़िया माध्यम) में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 56% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

6- सरकारी उच्च बालिका विद्यालय में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 0% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

7- ओ.पी.एम. उच्च विद्यालय (बालक) में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 20% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 6.66% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

अपवाद स्वरूप कुछ विद्यार्थियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग सभी विद्यालयों के उत्तरदाताओं में व्याकरणिक त्रुटियाँ देखी गई हैं|

अध्याय- 4 में समस्याओं का और भी गहरा अध्ययन करने के लिए चयनित सातों विद्यालयों के शिक्षकों के लिए भी प्रश्नावली बनाई गई | इस अध्याय में प्रधान अध्यापक, प्रधान अध्यापिका, कक्षा- छह, सात, आठ के हिंदी अध्यापक, अध्यापिका के लिए बनाई गई प्रश्नावली से प्राप्त उत्तर हैं|

कुछ विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव है, तो कुछ विद्यालयों में शिक्षकों के सही प्रशिक्षण का । शोध कार्य के लिए चयन किए गए विद्यालयों में से इस बात की जानकारी मुख्य रूप से पाई गई है कि विद्यार्थियों को हिंदी कहानी तो पढ़ना पसंद है, लेकिन हिंदी व्याकरण पढ़ना उन्हें पसंद नहीं।

कुल मिलाकर जिस उपकल्पना को लेकर यह शोध कार्य शुरू किया गया था, वह सत्य निकला कि झारसुगुड़ा (ओड़िशा), जो कि एक हिंदीतर भाषी क्षेत्र का हिस्सा है। यहाँ हिंदी भाषा शिक्षण की स्थिति अच्छी नहीं है और चिंतनीय स्थिति में है। यहाँ हिंदी विस्तार के नाम पर बहुत से कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जो अब तक कारगर होते हुए नहीं दिख रहें हैं।

****